विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ दिनांक -३० -०६ - २०२१

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -१०- शक्ति और क्षमा (कविता)के बारे में अध्ययन करेंगे।

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल सबका लिया सहारा,
पर नर व्याघ्र सुयोधन तुमसे कहो, कहाँ, कब हारा ?

क्षमाशील हो रिपु -समक्ष तुम हुये विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको कायर समझा उतना ही ।

अत्याचार सहन करने का कुफल यही होता है,
पौरुष का आतंक मनुज कोमल होकर खोता है ।

क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो ,
उसको क्या जो दंतहीन, विषरहित, विनीत, सरल हो ।

तीन दिवस तक पंथ मांगते रघुपति सिंधु किनारे,
बैठे पढते रहे छन्द अनुनय के प्यारे प्यारे ।

उत्तर में जब एक नाद भी उठा नही सागर से,
उठी अधीर धधक पौरुष की आग राम के शर से ।

सिंधु देह धर त्राहि-त्राहि करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज दासता ग्रहण की बंधा मूढ़ बन्धन में ।

सच पूछो तो शर में ही बसती है दीप्ति विनय की,
संधिवचन सम्पूज्य उसीका जिसमे शक्ति विजय की ।

**सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है,**
**बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है ।**

**क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल सबका लिया सहारा,**
**पर नर व्याघ्र सुयोधन तुमसे कहो, कहाँ, कब हारा ?**
**हिंदी में अर्थ : क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल, तुमने सबका सहारा लिया। किन्तु उस मनुष्य रुपी पशु (व्याघ्र) दुर्योधन (सुयोधन) ने तुमसे कब हार मानी।** ***('दुर्योधन' का अर्थ है जिसे युद्ध में बड़ी कठिनाई से जीता जा सके। परन्तु भीम ने यहाँ उसका अपमान करने के उद्देश्य से उसको सुयोधन कहकर सम्बोधित किया है , जिसका अर्थ है जिसे आसानी से युद्ध में हराया जा सके।)***